कुकुरमुत्ता

ज़ियाफ़त*

इसमें वही शरीक होंगे, जिन्हें न्योता नहीं भेजा गया, साथ ही जो कंगाल नहीं, न ऐसे बड़े आदमी, जो अपनी जगह गड़े रह गये। मतलब साफ़ है। हम दोनों मतलब के। न हम पैरों पड़ें न वह। मिहनत की कमाई हम भी खाँय और वह भी।

—'निराला'

४-६-४२

---

* प्रथम संस्करण की भूमिका।

[१]

एक थे नव्वाब,
फ़ारस के मँगाये थे गुलाब ।
बड़ी बाड़ी में लगाये
देशी पौधे भी उगाये
रखे माली कई नौकर
ग़ज़नवी का बाग़ मनहर
लग रहा था ।
एक सपना जग रहा था ।
साँस पर तहजीव की,
गोद पर तरतीव की ।
क्यारियाँ सुन्दर बनी

चमन में फैली घनी ।
फूलों के पौधे वहाँ
लग रहे थे खुशनुमा ।
बेला, गुलशब्बो, चमेली, कामिनी,
जुही, नरगिस, रातरानी, कमलिनी,
चम्पा, गुलमेंहदी, गुलखैरू, गुलअब्बास,
गेंदा, गुलदाऊदी, निवाड़ी, गन्धराज,
और कितने फूल, फ़व्वारे कई,
रंग अनेकों—सुर्ख़, धानी, चम्पई,
आसमानी, सब्ज़, फ़ीरोज़ी, सफेद,
ज़र्द, बादामी, बसन्ती, सभी भेद ।
फलों के भी पेड़ थे,
आम, लीची, सन्तरे और फालसे ।
चटक़ती कलियाँ, निकलती मृदुल गन्ध,
गले लगकर हवा चलती मन्द-मन्द,
चहकते बुलबुल, मचलती टहनियाँ,
बाग़ चिड़ियों का बना था आशियाँ ।
साफ़ राहें, सरो दोनों ओर,
दूर तक फैले हुए कुल छोर,
बीच में आरामगाह

दे रही थी बड़प्पन की थाह ।
कहीं झरने, कहीं छोटी-सी पहाड़ी,
कहीं सुथरा चमन, नक़ली कहीं झाड़ी ।

आया मौसिम, खिला फ़ारस का गुलाब,
बाग़ पर उसका पड़ा था रोबोदाब;
वहीं गन्दे में उगा देता हुआ बुत्ता
पहाड़ी से उठे-सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता—
"अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रङ्गोआब,
ख़ून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट !
कितनों को तू ने बनाया है ग़ुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-घाम,
हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर व' पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़ कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा

तभी साधारणों से तू रहा न्यारा ।
वरना क्या तेरी हस्ती है, पोच तू
काँटों ही से भरा है यह सोच तू
कली जो चटकी अभी
सूखकर काँटा हुई होती कभी ।
रोज़ पड़ता रहा पानी,
तू हरामी ख़ानदानी ।
चाहिए तुझको सदा मेरुन्निसा
जो निकाले इत्र, रू, ऐसी दिशा
वहाकर ले चले लोगों को, नहीं कोई किनारा
जहाँ अपना नहीं कोई भी सहारा
ख्वाव में डूवा चमकता हो सितारा
पेट में डँड़ पेले हों चूहे, ज़वाँ पर लफ्ज़ प्यारा ।

देख मुझको, मैं वढ़ा
डेढ़ वालिश्त और ऊँचे पर चढ़ा
और अपने से उगा मैं
विना दाने का चुगा मैं
क़लम मेरा नहीं लगता
मेरा जीवन आप जगता

तू है नक़ली, मैं हूँ मौलिक
तू है बकरा, मैं हूँ कौलिक
तू रँगा और मैं धुला
पानी मैं, तू बुल्बुला
तू ने दुनिया को बिगाड़ा
मैंने गिरते से उभाड़ा
तू ने रोटी छीन ली ज़नख़ा बनाकर
एक की दीं तीन मैंने गुन सुनाकर।

काम मुझ ही से सधा है
शेर भी मुझसे गधा है।
चीन में मेरी नक़ल, छाता बना
छत्र भारत का वही, कैसा तना
सब जगह तू देख ले
आज का फिर रूप पैराशूट ले।
विष्णु का मैं ही सुदर्शनचक्र हूँ।
काम दुनिया में पड़ा ज्यों, वक्र हूँ।
उलट दे, मैं ही जसोदा की मथानी
और भी लम्बी कहानी—
सामने ला, कर मुझे बेंड़ा

देख कैंड़ा
तीर से खींचा धनुष मैं राम का।
काम का—
पड़ा कन्धे पर हूँ हल बलराम का।
सुब्ह का सूरज हूँ मैं ही
चाँद मैं ही शाम का।
कलजुगी मैं ढाल
नाव का मैं तला नीचे और ऊपर पाल।

मैं ही डाँड़ी से लगा पल्ला
सारी दुनियाँ तोलती ग़ल्ला
मुझसे मूछें, मुझसे क़ल्ला
मेरे लल्लू, मेरे लल्ला
कहे रुपया या अधन्ना
हो बनारस या न्यवन्ना
रूप मेरा, मैं चमकता
गोला मेरा ही वमकता।
लगाता हूँ पार मैं ही
डुबाता मझधार मैं ही।
डब्बे का मैं ही नमूना
पान मैं ही, मैं ही चूना।

मैं कुकुरमुत्ता हूँ,
पर बेन्ज़ाइन (Bengoin) वैसे
बने दर्शनशास्त्र जैसे ।
ओम्फलस (Omphalos) और ब्रह्मावर्त
वैसे हो दुनिया के गोले और पर्त
जैसे सिकुड़न और साड़ी,
ज्यों सफाई और माड़ी ।
कास्मोपालीटन् और मेट्रोपालीटन्
जैसे फ्रायड् और लीटन् ।
फ़ेलसी और फ़लसफ़ा
ज़रूरत और हो रफ़ा ।
सरसता में फ्राड्
केपीटल् में जैसे लेनिनग्राड ।
सच समझ जैसे रक़ीव
लेखकों में लण्ठ जैसे ख़ुशनसीव ।

मैं डवल जव, वना डमरू
इकवग़ल, तव वना वीणा ।
मन्द्र होकर कभी निकला

कभी बनकर ध्वनि क्षीणा ।
मैं पुरुष और मैं ही अबला ।
मैं मृदङ्ग और मैं ही तबला ।
चुन्ने ख़ाँ के हाथ का मैं ही सितार
दिगम्बर का तानपूरा, हसीना का सुरबहार ।
मैं ही लायर, लीरिक मुझसे ही बने
संस्कृत, फ़ारसी, अरबी, ग्रीक, लैटिन के जने
मंत्र, ग़ज़लें, गीत मुझसे ही हुए शैदा
जीते हैं, फिर मरते हैं, फिर होते हैं पैदा ।
वायलिन् मुझसे बजा ।
बेन्जो मुझसे सजा ।
घण्टा; वण्टी, ढोल, डफ, घड़ियाल,
शङ्ख, तुरही, मजीरे, करताल,
कारनेट्, क्लेरीअनेट्, ड्रम, फ़्लूट, गीटर,
बजानेवाले हसन ख़ाँ, बुद्धू, पीटर,
मानते हैं सब मुझे ये बाँये से,
जानते हैं दाँये से ।

ताताधिन्ना चलती है जितनी तरह

देख, सब में लगी है मेरी गिरह ।
नाच में यह मेरा ही जीवन खुला
पैरों से मैं ही तुला ।
कत्थक हो या कथकली या बालडान्स,
क्लियोपेट्रा, कमल-भौंरा, कोई रोमान्स
बहेलिया हो, मोर हो, मणिपुरी, गरबा,
पैर, माझा, हाथ, गरदन, भौंहें मटका
नाच अफ्रीकन हो या यूरोपियन,
सब में मेरी ही गढ़न ।
किसी भी तरह का हावभाव,
मेरा ही रहता है, सबमें ताव ।
मैंने बदलें पैंतरे,
जहाँ भी शासक लड़े ।
पर हैं प्रोलेटेरियन झगड़े जहाँ,
मियाँ-बीबी के, क्या कहना है वहाँ ।
नाचता है सूदख़ोर जहाँ कहीं ब्याज डुचता,
नाच मेरा क्लाईमेक्स को पहुँचता ।

नहीं मेरे हाड़; काँटे, काठ या,